छत्तीसगढ़ ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका

*** अब्दुल सत्तार ** कमल नारायण गजपाल**

भारत गाँवों का देश है, यहाँ की बहुसंख्यक जनसंख्या ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है, देश का विकास तभी सार्थक होगा। जब ग्रामीण क्षेत्रों का समुचित रूप से विकास होगा। विकास का माध्यम कल–कारखानों, ऊँची इमारतों से नहीं, अपितु शिक्षा के उचित विस्तार से होता है, क्योंकि शिक्षा मानव के दृष्टिकोण में जहाँ उचित परिवर्तन लाती है। वहीं उसे पशु से मनुष्य की ओर अग्रेषित करती है, क्योंकि शिक्षा मनुष्य के व्यवहार में जहाँ उचित परिवर्तन लाती है।

विशेषकर भारत के संदर्भ में क्योंकि भारतीय समाज अनेक सामाजिक कुरीतियों एवं अंधविश्वासों से घिरा हुआ समाज है। इस समाज को हम परंपरागत समाज कह सकते हैं, क्योंकि जातीयता, मजहब, अशिक्षा, अंधविश्वास, रूढ़ियों आदि से ग्रसित समाज को आधुनिकता के सांचे में ढालने के लिए परिवर्तन आवश्यक है। संक्षेप में परिवर्तन एक सर्वव्यापी नियम है, किसी समाज में परिवर्तन तीव्र गति से होता है तो किसी समाज में मंद गति से, हम किसी भी ऐसे समाज की कल्पना नहीं कर सकते। जिसमें न तो कोई परिवर्तन होता है और न ही उसमें कोई गतिशीलता हो। शिक्षा को सामाजिक–परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम माना गया है। समाज में शिक्षा की व्यवस्था को इसलिए सुदृढ़ बनाया गया है, ताकि अपेक्षित परिवर्तन लाया जा सके। अतः शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम माना गया है।

leL;k&प्रस्तुत लघु शोध छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका पर एक अध्ययन है।

mnn';&शोधकर्ता द्वारा ली गयी समस्या छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका पर एक अध्ययन के लिए निम्नलिखित उद्देश्यों का निर्माण किया गयाः–

1. ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण अंचलों में सांस्कृतिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
3. ग्रामीण अंचलों में आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।

ifj lhek&प्रस्तुत लघुशोध पत्र की परिसीमा निम्नलिखित है–

1. छत्तीसगढ़ राज्य के दुर्ग जिले के लोहारा विकासखण्ड के 10 ग्रामों का चयन किया गया।
2. लोहारा विकासखण्ड के 10 ग्रामों के 100 ग्रामीणों का चयन किया गया।
3. इस अध्ययन हेतु 50 ग्रामीण महिला एवं 50 पुरूषों दोनों का चयन किया गया है।
4. उत्तरदाताओं का चयन दैव निदर्शन के आधार पर किया गया।

midj.k&छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण अंचलों में सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा की भूमिका के अध्ययन के लिए स्वनिर्मित साक्षात्कार परीक्षण का निर्माण कर उसका उपयोग किया गया, यह परीक्षण विशेषज्ञों के सहयोग से बनाया गया है। अतएव विश्वसनीय है।

ifof/k&स्वनिर्मित साक्षात्कार परीक्षण में 30 प्रश्न है, प्रत्येक प्रश्नों में सही उत्तरों के लिए 01 अंक दिये गये हैं एवं गलत उत्तरों के लिए शून्य अंक दिये गये हैं। सभी प्रश्नों में चयन हेतु दो बिन्दु हां व नही है।

fu"d"k&शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है, इसका समाज के साथ घनिष्ठ संबंध होता है। सामाजिक परिवर्तन में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है। समाज अपनी आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं की पूर्ति के लिए शिक्षा पर निर्भर रहता है। शिक्षा के द्वारा ही समाज के सदस्यों के आचरण एवं विचारों में परिवर्तन होता है। शिक्षा द्वारा समाज में सुधार हेतु नवीन आंदोलन आरंभ किये जाते हैं। सामाजिक सुधार संबंधी अभियान प्रारंभ करके शिक्षा उनके प्रति जन जागृति लाती है और समाज के लोकप्रिय बनकर लोगों को इन सुधारों को स्वीकार करने के लिए तैयार करती है। शिक्षा द्वारा परिवर्तनों की समीक्षा करके वांछनीय संरक्षण एवं अवांक्षनीय का निरसन किया जाता है। इन परिवर्तनों की समीक्षा के लिए शिक्षा द्वारा कसौटी तैयार की जाती है। समीक्षा के लिए तैयार की गई कसौटी पर परिवर्तन की जांच करके वांछनीय परिवर्तनों को स्वीकार कर लिया जाता है और अंवाछनीय को लाभ दिया जाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा द्वारा

*** व्याख्याता, अध्यापक शिक्षा संस्थान पं.र.शु.वि., रायपुर**
**** सहायक प्राध्यापक, प्रगति शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर**

सामाजिक परिवर्तन के अंतर्गत उत्तरदाताओं में शिक्षा के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक विकास के संबंध में जानकारी प्राप्त करें। जिसका विश्लेषण निम्नानुसार है :—

1. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं में 50 महिला उत्तरदाताओं एवं 50 पुरूष उत्तरदाता हैं।
2. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने शिक्षा को अनिवार्य रूप में अपनी जानकारी हाँ में व्यक्त की।
3. स्त्री शिक्षा को अनिवार्य के रूप में संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने अपनी जानकारी हां में व्यक्त की।
4. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं में से 95 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बाल विवाह के विरूद्ध अपनी जानकारी हां में व्यक्त की शेष 05 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नहीं में अपनी जानकारी व्यक्त की। उत्तरदाताओं ने इसका कारण परंपरागत रूढ़िवादी परंपरा में अपनी राय व्यक्त की।
5. संपूर्ण महिलाओं को रोजगार के पक्ष में संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने अपनी राय व्यक्त की है।
6. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं में दहेज प्रथा के विरूद्ध अपनी राय व्यक्त की।
7. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने दहेज प्रथा के विरूद्ध अपनी राय हां में व्यक्त की।
8. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने अंधविश्वास छुआछुत के विरूद्ध अपनी जानकारी हां में व्यक्त की।
9. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने पर्दाप्रथा के विरूद्ध अपनी जानकारी हां में व्यक्त की।
10. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं को शिक्षा के माध्यम से क्षमता विकास संबंधी जानकारी प्राप्त होने के संबंध में अपनी राय हां में व्यक्त की।
11. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने शिक्षा के माध्यम से उन्नत कृषि कार्य के संबंध में अपनी जानकारी हां में व्यक्त की।
12. संपूर्ण 100 उत्तरदाताओं ने शिक्षा के माध्यम से उन्नत कृषि विधियों के प्रयोग संबंधी अपनी जानकारी हां में व्यक्त की।

lanHkZ&xzaFk lwph %

1. पाण्डेय, डॉ. रामशकल, 1999; भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मंदिर।
2. त्यागी एवं पाठक, 2000; शिक्षा के सामान्य सिद्धांत, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. समाज कल्याण, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, 2007।
4. समाज कल्याण विभाग, छत्तीसगढ़ शासन एक सर्वे, 2007।